International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

कृपा शंकर यादव

शोध–छात्र (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज

Article Info
Volume 8, Issue 3
Page Number : 641-652

Publication Issue
May-June-2021

Article History
Accepted : 10 June 2021
Published : 15 June 2021

ABSTRACT

स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् बी0एड0 प्रशिक्षुओं को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में लॉटरी विधि से 4 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का चयन किया गया तत्पश्चात् उसमें प्रशिक्षित 150 बी0एड0 प्रशिक्षुओं (75 स्ववित्तपोषित एवं 75 अनुदानित) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 महेश भार्गव के द्वारा निर्मित 'व्यक्तित्व घटक मापनी' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में अवसाद की मात्रा अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं की अपेक्षा उच्च पाया गया। स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में अवसाद की मात्रा अधिक पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में उच्च फीस के साथ–साथ अन्य मदों के लिए लिये जाने वाले धनराशि तथा प्रशिक्षण हेतु उच्च स्तरीय शिक्षकों की कमी एवं संसाधनों की अनुपलब्धता के कारण उनके प्रशिक्षण में आने वाली समस्याएँ उनके अवसाद में वृद्धि का कारण हो सकता है। साथ ही अन्य घटकों एवं व्यक्तित्व में समानता पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि दोनों ही शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं अतः उनका लक्ष्य समान होता है जिसमें उन्हें एक कुशल एवं उच्च व्यक्तित्व वाला शिक्षक बनने का होता है, इसलिए दोनों प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं द्वारा अपने व्यक्तित्व पर समान रूप से ध्यान देना हो सकता है।

Keywords : स्ववित्तपोषित, अनुदानित, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, बी0एड0 प्रशिक्षु, व्यक्तित्व एवं उसके घटक

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भूमिका–

व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसका एक अनूठा समायोजन स्थापित करते हैं। उपर्युक्त परिभाषा में 'मनोशारीरिक' से तात्पर्य व्यक्ति के मन एवं शरीर दोनों सम्मिलित है। ''गत्यात्मक'' से तात्पर्य है कि व्यक्तित्व का विकास समायोजन प्रक्रिया पर आधारित है एवं व्यक्तित्व का क्रियात्मक पक्ष वातावरण से अभियोजन करना है।

आलपोर्ट के अनुसार, व्यक्तित्व को एक निष्क्रिय वस्तु नहीं मान लेना चाहिए क्योंकि परिस्थितियाँ व्यक्तित्व पर पूर्ण अधिकार नही कर सकती। किसी व्यक्तित्व में यह भी क्षमता पायी जाती है कि वह परिस्थितियों में परिवर्तन ला दे एवं उन्हें स्वयं के अनुकूल बना लें। **अंग्रेजी के कैम्ब्रिज अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोश के अनुसार,** ''आप जिस प्रकार के व्यक्ति है, वही आपका व्यक्तित्व है और वह आपके आचरण, संवेदनशीलता तथा विचारों से व्यक्त होता है।''

भगवद्गीता का कहना है कि– ''असंयमित मन एक शत्रु के समान और संयमित मन हमारे मित्र के समान आचरण करता है। अतः हमें अपने मन की प्रक्रिया के विषय में एक स्पष्ट धारणा रखने की आवश्यकता है जिसका प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ता है।''

व्यक्तित्व विकास के लिये आवश्यक गुण–

1. अपने आप में विश्वास
2. सकारात्मक विचार अपनाओ
3. आत्मनिर्भरता
4. त्याग और सेवा
5. असफलताओं तथा भूलों के प्रति दृष्टिकोण

मनुष्य में व्यक्तित्व को दो भागें में विभाजित किया गया है– अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का व्यक्ति परिस्थितियों के प्रति निषेधात्मक रूप से प्रतिक्रिया करता है अथवा परिस्थितियों से स्वयं को हटा लेता है। इस व्यक्तित्व के लक्षण, स्वभाव, आदतें और अन्य चालक वाह्य रूप से प्रकट नही होते है, इसलिए इनको अन्तर्मुखी कहा जाता है।

इस व्यक्तित्व के मनुष्य अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों से विपरीत होते है। बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों का झुकाव वाह्य तत्त्वों की ओर होता है। वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते है।

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करना है। शिक्षा द्वारा आज जन–जन को स्वावलम्बन, नैतिक, भौतिक समृद्धि, सामाजिक उत्तरदायित्व, शरीर तथा आत्मा के उच्चतम उत्कर्ष की प्राप्ति करना सम्भव हुआ है। वस्तुतः मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, व्यावसायिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यावहारिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, भावमूलक, इच्छामूलक, सौन्दर्यमूलक विकास आदि व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को शिक्षा के माध्यम से परिपुष्ट एवं परिवर्द्धित कर सकते हैं।

शिक्षक अपने बढ़ते हुए उत्तरदायित्व का निर्वाह तभी कर सकते हैं जब उनमें ये गुण हों– उत्तम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, उच्च सामाजिकता, उच्च सांस्कृतिक दृष्टिकोण, स्पष्ट जीवन दर्शन, नैतिक एवं चरित्रबल, अपने विषय का स्पष्ट ज्ञान विभिन्न मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ जैसे अच्छा व्यक्तित्व, संवेगात्मक स्थिरता, दृष्टिकोण, विषयों का सामान्य ज्ञान, शिक्षण कौशलों में दक्षता तथा संगठन शक्ति। इन गुणों के साथ–साथ उसे अध्ययनशील एवं प्रगतिशील भी होना चाहिए। आत्मविश्वास तथा उत्साह तो किसी भी व्यक्ति की सफलता के राज होते हैं। विद्वानों का मत है कि शिक्षकों को गम्भीरता के साथ–साथ विनोदी भी होना चाहिए।

नदफ, साहेबलाल, माहीबुब (2011). निष्कर्ष के रूप में पाया कि– व्यक्तित्व के गुणों अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी तथा निम्न एवं उच्च अध्ययन आदत वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के वातावरण जागरूकता में अन्तर पाया गया। **निशा (1991),** अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि – उच्च व निम्न विराग वाले किशोरों के व्यक्तित्व के विमाओं, सौन्दर्यात्मक मूल्य परिवार, भावात्मक और पूर्ण समायोजन, स्व–सम्मान में सार्थक अन्तर पाया गया। **अस्थाना, मधु व बाला, शशि (2007).** के निष्कर्ष में छात्र –छात्राओं के व्यवहार की समस्याओं में सार्थक अन्तर देखा गया। **भूषण, देवेन्द्र (2008).** के निष्कर्ष के रूप में पाया कि– व्यक्तित्व प्राणी के समस्त मनोशारीरिक गुणों जैसे जैविक अंतःप्रकृति, प्रवृत्तियों, इच्छाओं, अंतःप्रेरणाओं, उपार्जित झुकावों का गत्यात्मक संगठन होता है और उसकी विभिन्न विमाऐं जैसे अंतर्मुखता–बहिर्मुखता आत्मसंप्रत्यय, स्वभाव आदि प्राणी की समस्त विचारोतेजनाओं व क्रिया कलापों को पारस्परिक अंतःक्रिया तथा वातावरण से अपूर्व अभियोजन के माध्यम से जीवनपर्यंत प्रभावित करती रहती है। **प्रताप, अजित (2012).** निष्कर्ष में पाया कि प्रत्येक व्यक्ति का मानसिक विकास, वातावरण, वंशानुक्रम, सामाजिक स्थिति, परिवार, स्वास्थ्य, विद्यालय, जनसंचार माध्यम, शिक्षक आदि के साथ की गयी अन्तःक्रियाओं का परिणाम होता है। फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति में व्यैक्तिक विभिन्नताओं का होना स्वाभाविक है।

अतः वर्तमान में शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व उनके आगे के लक्ष्यों के साथ–साथ शिक्षक पद पर नियुक्ति के बाद बच्चों पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। अतः अध्ययनकर्त्ता द्वारा यह देखने का प्रयास किया गया है कि क्या स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं का व्यक्तित्व गुण अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं से अन्तर रखता है या नहीं?

समस्या कथन–

''स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है–

1. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

   1.1 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत सक्रियता–निष्क्रियता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.2 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत उत्साही–निरूत्साही का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.3 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत दृढ़प्रस्तोता–सहिष्णु का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.4 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत अविश्वासी–विश्वासी का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत अवसादी–अवसाद रहित का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.6 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत सांवेगिक अस्थिरता–सांवेगिक स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.1 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत सक्रियता–निष्क्रियता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.2 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत उत्साही–निरूत्साही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.3 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत दृढ़प्रस्तोता–सहिष्णु में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.4 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत अविश्वासी–विश्वासी में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.5 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत अवसादी–अवसाद रहित में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

   1.6 स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों के अन्तर्गत सांवेगिक अस्थिरता–सांवेगिक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि

अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् बी0एड0 प्रशिक्षुओं को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में लॉटरी विधि से 4 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का चयन किया गया तत्पश्चात् उसमें प्रशिक्षित 150 बी0एड0 प्रशिक्षुओं (75 स्ववित्तपोषित एवं 75 अनुदानित) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

उपकरण के रूप में डॉ0 महेश भार्गव के द्वारा निर्मित 'व्यक्तित्व घटक मापनी' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

प्राप्त परिणाम एवं व्याख्या–

1. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

सारणी सं0 1

व्यक्तित्व के घटक सक्रियता–निष्क्रियता मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–अनुपात

शि0प्र0सं0 के प्रकार	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात
स्ववित्तपोषित	75	13.97	2.70	1.20
अनुदानित	75	14.51	2.84	

*.05 स्तर पर असार्थक

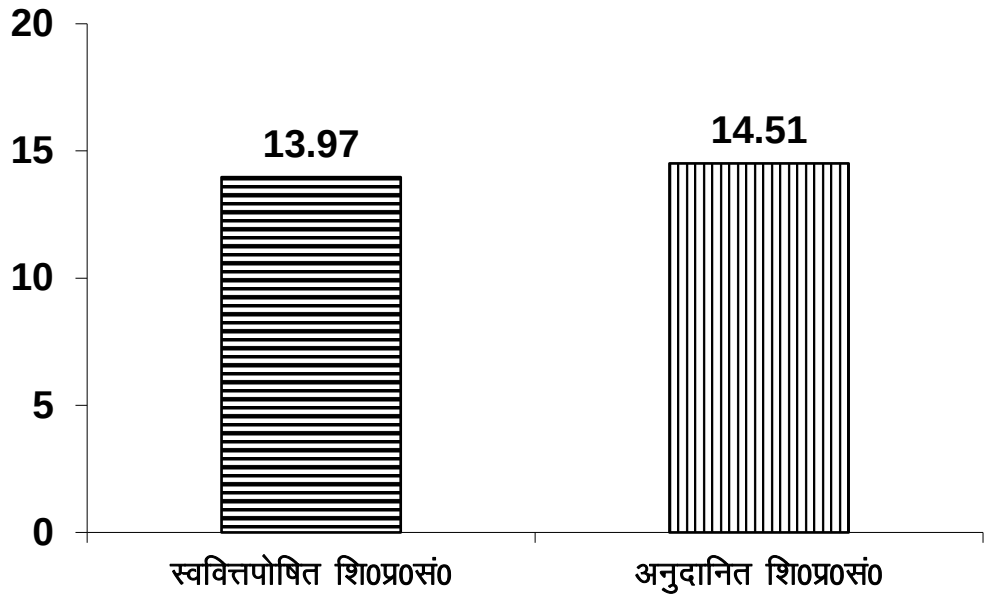

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक सक्रियता–निष्क्रियता का मध्यमान क्रमशः 13.97 एवं 14.51 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.70 एवं 2.84 है। टी–अनुपात का मान 1.20 है जो .05 स्तर पर असार्थक होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। परिणामतः स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक सक्रियता–निष्क्रियता में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 2

व्यक्तित्व के घटक उत्साही–निरूत्साही मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–अनुपात

शि0प्र0सं0 के प्रकार	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात
स्ववित्तपोषित	75	11.40	3.58	0.07
अनुदानित	75	11.44	3.21	

*.05 स्तर पर असार्थक

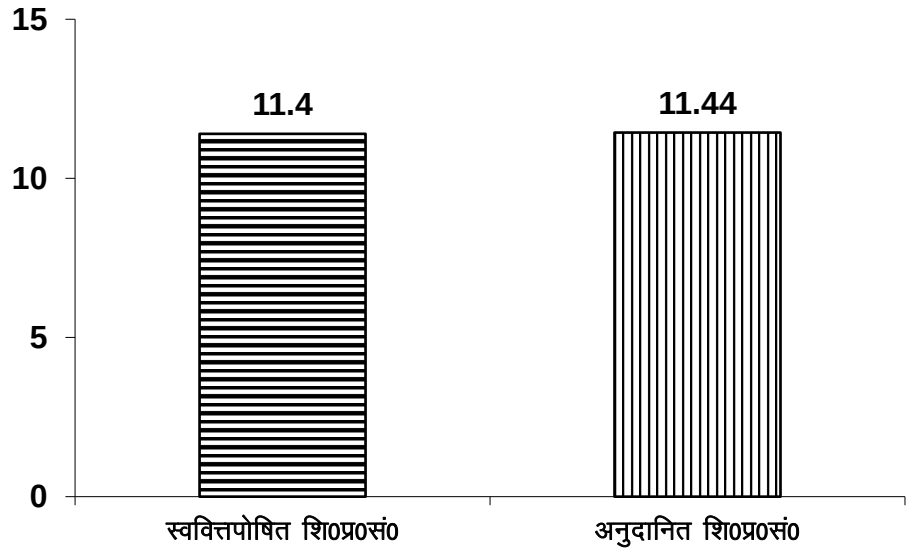

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक उत्साही–निरूत्साही का मध्यमान क्रमशः 11.40 एवं 11.44 है तथा मानक विचलन क्रमशः 3.58 एवं 3.21 है। टी–अनुपात का मान 0.07 है जो .05 स्तर पर असार्थक होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। परिणामतः स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक उत्साही–निरूत्साही में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 3

व्यक्तित्व के घटक दृढ़प्रस्तोता–सहिष्ण मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–अनुपात

शि0प्र0सं0 के प्रकार	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात
स्ववित्तपोषित	75	7.93	1.84	1.74
अनुदानित	75	8.40	1.50	

*.05 स्तर पर असार्थक

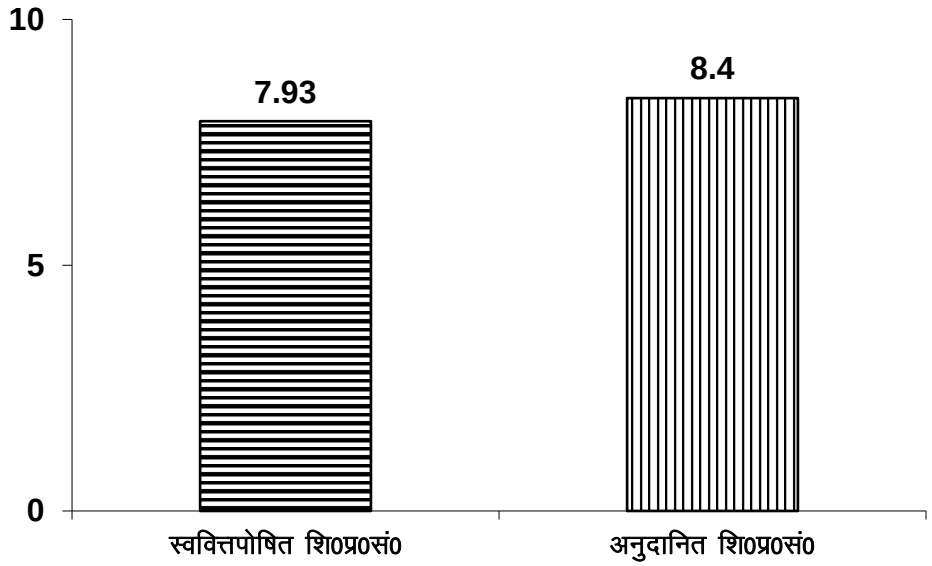

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक दृढ़प्रस्तोता–सहिष्णु का मध्यमान क्रमशः 7.93 एवं 8.40 है तथा मानक विचलन क्रमशः 1.84 एवं 1.50 है। टी–अनुपात का मान 1.74 है जो .05 स्तर पर असार्थक होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। परिणामतः स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक दृढ़प्रस्तोता–सहिष्णु में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 4

व्यक्तित्व के घटक अविश्वासी–विश्वासी मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–अनुपात

शि0प्र0सं0 के प्रकार	N	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी–अनुपात**
स्ववित्तपोषित	75	7.15	2.15	0.84
अनुदानित	75	7.41	1.56	

*.05 स्तर पर असार्थक

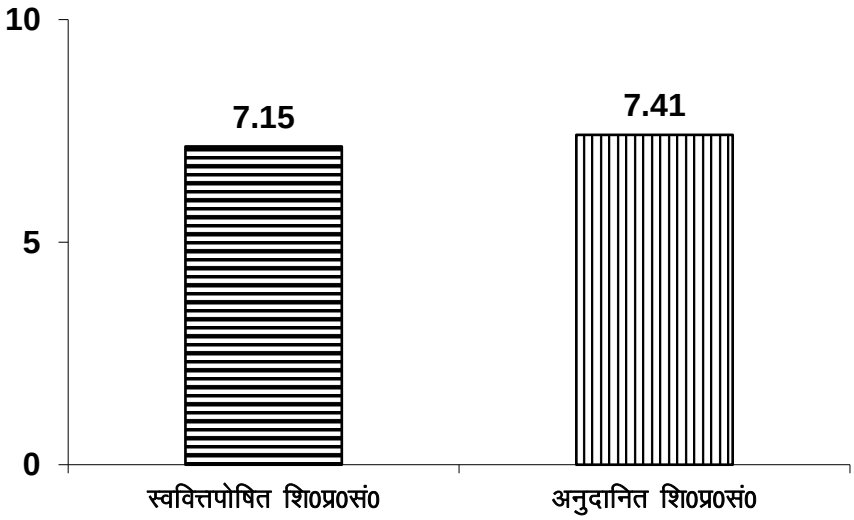

सारणी संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक अविश्वासी–विश्वासी का मध्यमान क्रमशः 7.15 एवं 7.41 है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.15 एवं 1.56 है। टी–अनुपात का मान 0.84 है जो .05 स्तर पर असार्थक होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। परिणामतः स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक अविश्वासी–विश्वासी में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 5

व्यक्तित्व के घटक अवसादी–अवसाद रहित मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–अनुपात

शि0प्र0सं0 के प्रकार	N	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी–अनुपात**
स्ववित्तपोषित	75	8.01	1.47	2.75*
अनुदानित	75	7.35	1.50	

*.05 स्तर पर सार्थक

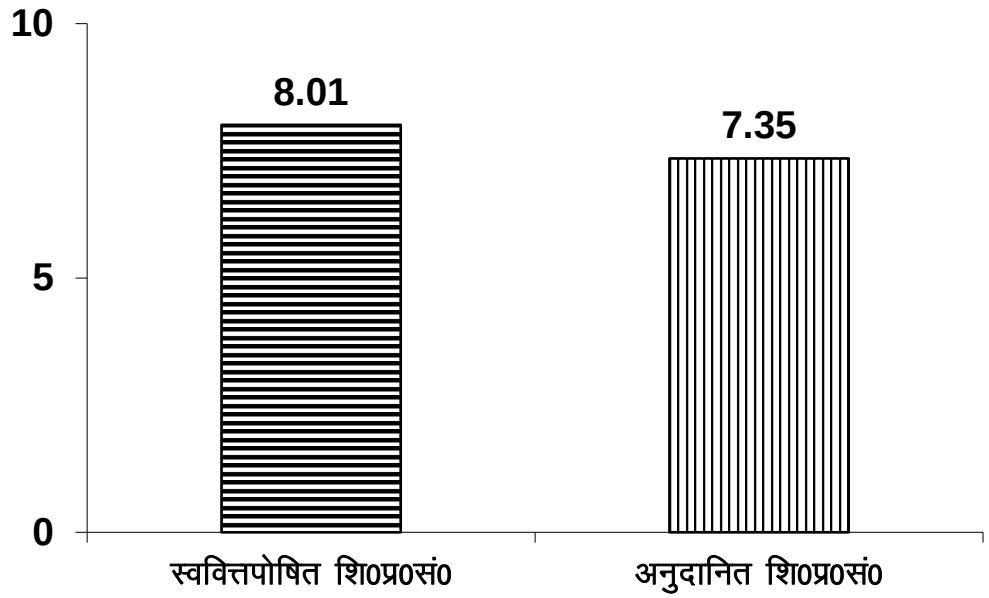

सारणी संख्या 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक अवसादी– अवसाद रहित का मध्यमान क्रमशः 8.01 एवं 7.35 है तथा मानक विचलन क्रमशः 1.47 एवं 1.50 है। टी–अनुपात का मान 2.75 है जो .05 स्तर पर सार्थक होने पर शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। परिणामतः स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक अविश्वासी–विश्वासी में अन्तर है।

सारणी सं0 6

व्यक्तित्व के घटक सांवेगिक अस्थिरता–सांवेगिक स्थिरता मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–अनुपात

शि0प्र0सं0 के प्रकार	N	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी–अनुपात**
स्ववित्तपोषित	75	8.91	1.71	1.42
अनुदानित	75	9.28	1.51	

*.05 स्तर पर असार्थक

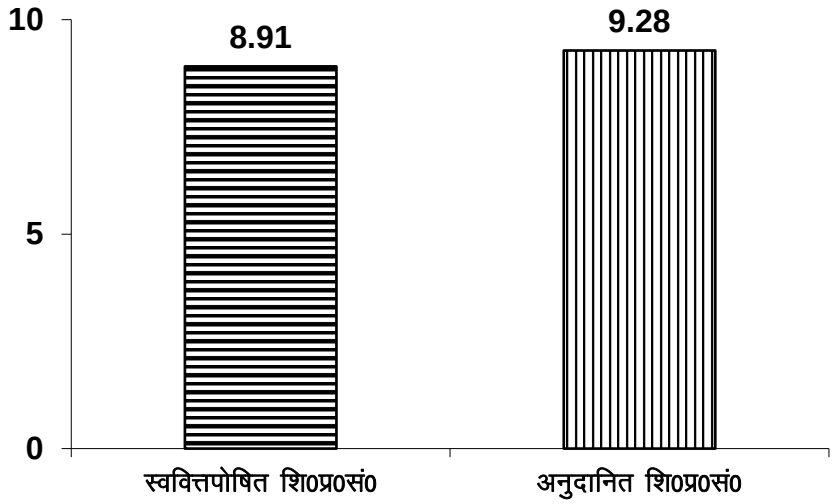

सारणी संख्या 6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक अवसादी– अवसाद रहित का मध्यमान क्रमशः 8.91 एवं 9.28 है तथा मानक विचलन क्रमशः 1.71 एवं 1.51 है। टी–अनुपात का मान 1.42 है जो .05 स्तर पर सार्थक होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। परिणामतः स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व घटक सांवेगिक अस्थिरता– सांवेगिक स्थिरता में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 7

व्यक्तित्व के मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–अनुपात

शि0प्र0सं0 के प्रकार	N	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी–अनुपात**
स्ववित्तपोषित	75	57.37	5.92	1.05
अनुदानित	75	58.39	5.99	

*.05 स्तर पर असार्थक

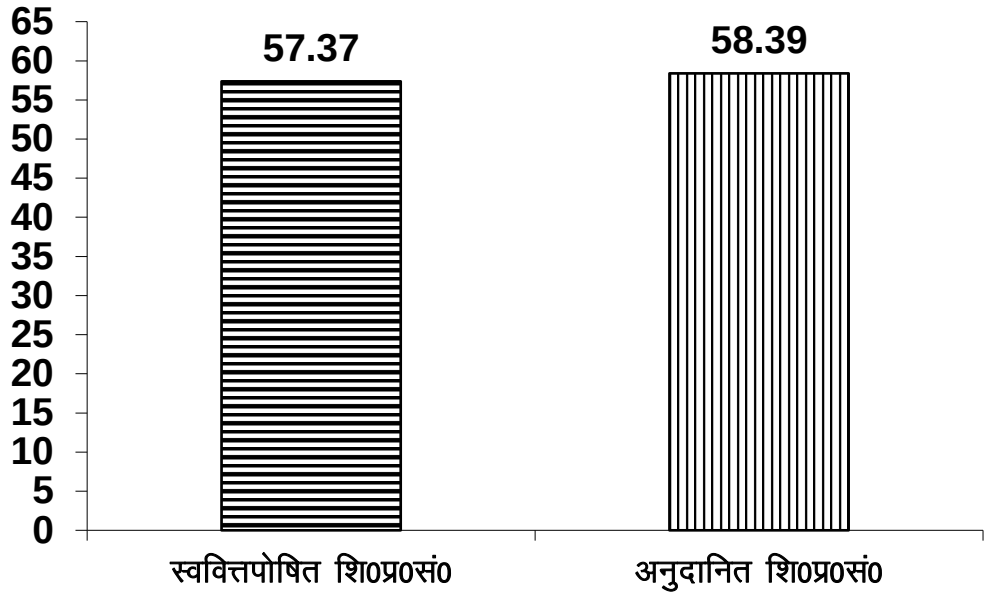

सारणी संख्या 7 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व का मध्यमान क्रमशः 57.37 एवं 58.39 है तथा मानक विचलन क्रमशः 5. 92 एवं 5.99 है। टी–अनुपात का मान 1.05 है जो .05 स्तर पर सार्थक होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। परिणामतः स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में व्यक्तित्व में अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

अध्ययन के परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुये–

1. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं की व्यक्तित्व के घटक सक्रियता–निष्क्रियता, उत्साही–निरूत्साही, दृढ़प्रस्तोता– सहिष्णु, अविश्वासी– विश्वासी, एवं सांवेगिक अस्थिरता–सांवेगिक स्थिरता में अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में व्यक्तित्व के घटक सक्रियता–निष्क्रियता, उत्साही–निरूत्साही, दृढ़प्रस्तोता–सहिष्णु, अविश्वासी– विश्वासी, एवं सांवेगिक अस्थिरता–सांवेगिक स्थिरता में समानता है।
2. स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं की व्यक्तित्व के घटक अवसादी–अवसाद रहित में अन्तर है अर्थात् स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में अवसाद की मात्रा अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं की अपेक्षा उच्च पाया गया।

स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में अवसाद की मात्रा अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं की अपेक्षा उच्च पाया गया। स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षुओं में अवसाद की मात्रा अधिक पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि स्ववित्तपोषित शिक्षक

प्रशिक्षण संस्थानों में उच्च फीस के साथ–साथ अन्य मदों के लिए लिये जाने वाले धनराशि तथा प्रशिक्षण हेतु उच्च स्तरीय शिक्षकों की कमी एवं संसाधनों की अनुपलब्धता के कारण उनके प्रशिक्षण में आने वाली समस्याएँ उनके अवसाद में वृद्धि का कारण हो सकता है। साथ ही अन्य घटकों एवं व्यक्तित्व में समानता पाया जाना इस बात को इंगित करता है कि दोनों ही शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं अतः उनका लक्ष्य समान होता है जिसमें उन्हें एक कुशल एवं उच्च व्यक्तित्व वाला शिक्षक बनने का होता है, इसलिए दोनों प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं द्वारा अपने व्यक्तित्व पर समान रूप से ध्यान देना हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- निशा (1991), ए स्टडी ऑफ एडोलेसन्स एलीनेशन इन रिलेशन टू पर्सनालिटी वैल्यूज, एडजस्टमेण्ट, सेल्फ स्टीम, लोकस ऑफ कन्ट्रोल एण्ड एकेडमिक, एम.बी. बुच, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च इन एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, वाल्यूम II, पृ0 1895–96
- अस्थाना, मधु (2007). स्टूडेंट्स एलाइनेशन इन रिलेशन टू देयर पर्सनालिटी एडं इंटेलीजेंस अक्रास जेंडर पर्सपेक्टिव, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एडं एजुकेशन, पटना, अंक 38 (1) पृ0 29–34
- भूषण, देवेन्द्र (2008). उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के संदर्भ में वैज्ञानिक सृजनात्मकता का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, कानपुर : छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय।
- नदफ, साहेबलाल, माहीबुब (2011). ए स्टडी ऑफ इनवायरमेण्टल अवेयरनेस ऑफ सेकेण्डरी टीचर ट्रेनिज इन रिलेशन टू देयर डिमोग्राफिक, वैरियबल्स, पॉसनालिटी फैक्टर्स, सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड स्टडी हैबीट्, पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेण्ट ऑफ स्टडीज इन एजूकेशन, कर्नाटक यूनिवर्सिटी।
- प्रताप, अजित (2012). छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
- कौर, हरप्रीत (2013). शासकीय एवं अशासकीय विज्ञान शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं उनकी वचनबद्धता का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन, पी.एच.डी0 शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), पंजाब विश्वविद्यालय।